بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in

.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 07.11 .25

तहरीक ए जदीद के इक्यानवेवें (91) वर्ष में जमाअत के लोगों की ओर से पेश की जाने वाली माल की कुर्बानियों की चर्चा तथा बानवेवें (92) वर्ष के प्रारम्भ की घोषणा।

सारांश ख़ुत्बः जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआलाबिनस्रिहिल अज़ीज़ि,

यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (नबुव्वत की तिथि 07 ,1404 हश) 07.11. 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم ۔بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद ,तअव्वुज़ तस्मियः तथा सूरः फ़ातिहः की आयत संख्या 362 की अनुवाद सहित तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बि नसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- पहली नवम्बर से अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत का तहरीके जदीद का नव वर्ष प्रारम्भ होता है, इस संदर्भ में तहरीके जदीद के नए साल का एलान भी किया जाता है और गत वर्ष जो बीत गया है उसमें धन के बलिदान का भी वर्णन होता है। इसी प्रकार माल की क़ुरबानी के विषय में भी कुछ बयान होता है।

तहरीके जदीद का प्रारम्भ 1934 में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने फ़रमाया था, इसका कारण यह बना था कि उस समय जमाअत के विरुद्ध अहरार ने एक उपद्रव मचाया हुआ था, और बड़ा शोर किया हुआ था। बहिश्ती मक़बरा, जहां हज़रत मसीह मौऊद अलै. का मज़ार है,

उसके अनादर का भी प्रोग्राम था। सरकार भी एक दृष्टि से विरोधियों का समर्थन कर रही थी। ऐसे समय पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने जमाअत को प्रेरणा दी कि एक फंड जमा करें ताकि हम अहमदिय्यत और इसलाम के पैग़ाम को दुनिया के कोने कोने में पहुंचाएं तथा जमाअत के निज़ाम को सुद्रढ़ करें ताकि विरोधियों के षडयन्त्र एवं उपद्रव का निवारण हम कर सकें। एक जगह यदि विरोध है तो दूसरी जगह प्रगति नज़र आती हो और जमात का निज़ाम फैलता चला जाए। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से आज हम देख रहे हैं कि दुनिय के समस्त देशों में अहमदिय्यत और वास्तविक इसलाम का पैग़ाम पहुंचा हुआ है और हमारे मिशनरीज़, मुबल्लिग़ वहाँ काम कर रहे हैं, हस्पताल काम कर रहे हैं, मुबल्लिग़ एवं मुरब्बी सिलसिले की सेवा करने का सुअवसर प्राप्त कर रहे हैं, लिट्रेचर का प्रकाशन हो रहा है, केन्द्रीय स्टूडियो के अतिरिक्त एम.टी.ए. के स्टूडियोज़ अनेक देशों में स्थापित हैं, रेडियो स्टेशनज़ स्थापित हैं। यद्यपि ये सारे काम जो हैं, इनका बहुत सा ख़र्च शेष चन्दों से भी पूरा किया जाता है, परन्तु तहरीके जदीद इसमें अति विशाल भूमिका निभा रही है।

और यह जो एहरार पार्टी का दावा था कि हम क़ादियान की ईंट से ईंट बजा देंगे, अहमदियत को धरती के पटल से मिटा देंगे, और आज तक हमारे विरोधी ये नारे लगते हैं, तो इन नारों का हर साल जवाब जमाअत की उन्नति से दिया जाता है, अल्लाह तआला के फ़ज़लों से दिया जाता है। जमाअत में बैअत करके शामिल होने वाले लोग इसका जवाब हैं, और आज 220 देशों में फैली हुई जमाअत की प्रगति इसका जवाब है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि अतः अल्लाह तआला की यह अनुकम्पा एवं समर्थन इस बात का प्रमाण है कि हज़रत मसीह मौऊद अलै. का दावा सच्चा था, और है, और अहमदियत अल्लाह तआला की कृपा से किसी मनुष्य का बोया हुआ पौधा नहीं, किसी संगठन द्वारा स्थापित पौधा नहीं, किसी शासन द्वारा लगाया गया पौधा नहीं, बल्कि ख़ुदा तआला का क़ायम किया हुआ पौधा है जो एक मज़बूत वृक्ष बन चुका है, जिसकी डालियाँ पूरे विश्व में फैली हुई हैं और अल्लाह तआला इसको और अधिक फैलाता और फल लगाता चला जा रहा है, यह क्रम जारी है तथा बढ़ता चला जा रहा है। हुज़ूरे अनवर ने तिलावत की हुई सूरः अलबक़रः की आयत 262 के प्रकाश में बयान किया कि अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया है कि मैं तुम्हें, जो तुम मेरे लिए ख़र्च करते हो, बिना उसका बदला दिए नहीं छोड़ता, बल्कि यह शक्ति रखता हूँ कि तुम्हारी इस क़ुरबानी को सात सौ गुना तक, बल्कि इससे भी अधिक कर दूं। अतः यह इरशाद फ़रमाकर अल्लाह तआला ने मोमिनों के दिलों में यह तहरीक पैदा फ़रमाई है कि अपने दिल खोलते चले जाओ, अल्लाह के दीन को प्रचारित करने के लिए ख़र्च करो, जो काम इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलै. और महदी मअहूद अलै. के सपुर्द था और फिर आप अलै. की जमाअत के सपुर्द है, जो क़ुरबानी करने वाले हैं, वे अपनी भावनाएं

भी मुझे लिखते हैं, आश्चर्य होता है कि किस प्रकार अल्लाह तआला ने उनको क़ुरबानी करने का सामर्थ्य प्रदान किया और किस प्रकार उनके ईमानों के सुदृढ़ किया।

हुज़ूरे अनवर ने **इन्फाक़ फ़ी सबीलिल्लाह** (अल्लाह के लिए धन का बलिदान) के महत्त्व को स्पष्ट करने के विषय में कुछ ज्ञान वर्धक एवं ऐतिहासिक संदर्भ दिए, और फ़रमाया- ये हिदायत है उन लोगों के लिए जिन्होंने धन का बलिदान दिया कि वे अपनी इबादतों के स्तर भी बढ़ाएं, माल की क़ुर्बानी करके यह नहीं समझ लेना चाहिए कि हम इबादतों से निश्चिन्त हो गए।

फ़रमाया- आँहज़रत ﷺ के ज़माने के सहाबियों के उदाहरण भी मिलते हैं, और इसी प्रकार हमारी जमाअत में भी बजुर्गों के नमूने यही होते हैं कि वे अपने धन को अल्लाह के लिए ख़र्च करते हुए गिना नहीं करते थे बल्कि बेहिसाब ख़र्च किया करते थे।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. भी बहुत क़ुर्बानियाँ किया करते थे। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने एक जगह ख़ुद इसका वर्णन किया कि मैं अनुमति देता तो वह अर्थात मौलाना नूरुद्दीन ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी. सब कुछ इस राह में फ़िदा करके अपनी आध्यात्मिक संगत की भांति शारीरिक संगत एवं हर पल संगति में रहने का हक़ अदा करते।

हुज़ूरे अनवर ने दुनिया भर के निष्ठावानों के तहरीके जदीद के धन सम्बन्धी जिहाद में भेंट की गयी कुर्बानियों के परिवेश में अलबानिया, इंडोनेशिया, घाना, गिनी कनाकरी एवं माली देश इत्यादि के निष्ठावानों के धन के बलिदानों के विभिन्न ईमान वर्धक वृत्तांतों तथा उन पर अवतरित होने वाले पुरस्कारों एवं कृपाओं का वर्णन किया।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- तहरीके जदीद भारत के इन्स्पक्टर तिलंगाना के एक व्यक्ति के विषय में लिखते हैं, जो हैद्राबाद के एक स्थान के हैं, उनका वादा सात हज़ार रुपए का था, किन्तु नौकरी समाप्त हो जाने के कारण वे अदायगी नहीं कर सके। अगले साल के लिए उन्होंने दस हज़ार का वादा लिखवा दिया। उनसे कहा गया कि गत वर्ष का वादा तो आपने पूरा नहीं किया, आगे के लिए बढ़ाकर दे रहे हैं, वादा कर रहे हैं, तो उन्होंने जवाब दिया कि अल्लाह तआला इसका प्रबन्ध करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है, क्यूंकि मैं अल्लाह के लिए दे रहा हूँ। अतः कुछ दिनों में ही उन्हें पहले से अच्छी नौकरी मिल गई, और उन्होंने पिछले दो वर्षों का भी चन्दा अदा किया और नए आर्थिक वर्ष में अपना वादा भी सात हज़ार के बजाए अब तीस हज़ार पेश कर दिया और इसकी अदायगी भी कर दी। इस प्रकार अल्लाह तआला ने उनकी निष्ठा को स्वीकार करते हुए अनुकम्पा प्रदान की।

इसके बाद हुज़ूरे अनवर ने तहरीके जदीद के बानवेवें (92) नव वर्ष की घोषणा फ़रमाई और तहरीके जदीद के इक्यानवेवें (91) वर्ष की रिपोर्ट पेश करते हुए फ़रमाया कि अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत को 19.55 मिलयन पाउंड की क़ुर्बानी पेश करने की तौफ़ीक़

मिली, अल्हम्दुलिल्लाह, जो गत वर्ष की तुलना में 15 लाख 64 हज़ार पाउंड अधिक होते हैं।

सामूहिक वसूली की दृष्टि से पहली दस जमाअतें: जर्मनी, बर्तानिया, अमरीका, केनेडा, भारत, आस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, मिडिल ईस्ट की जमाअतें और घाना।

विशेष उन्नति करने वाली जमाअतें: मारेशस एवं हालैंड।

सम्पूर्ण कारकर्दगी की दृष्टि से अन्य वर्णन योग्य जमाअतें: बेलजियम, स्वीडन, फ़्रांस, हालैंड, कबाबीर, बंगला देश, बर्कीना फ़ासो, नयूज़ीलैंड, सीरालियोन, बेनिन, माली, नाईजर, तुर्की, जार्जिया, मिडिल ईस्ट की जमाअतें तथा आस्ट्रेलिया।

अफ़्रीक़ा में सामूहिक वसूली की दृष्टि से प्रथम पांच जमाअतें:-
घाना, मारेशस, नाईजेरिया, बर्कीनाफ़ासो एवं तंज़ानिया। तहरीके जदीद में मौजूद कुल संख्या 17 लाख तक है। इस वर्ष की रिपोर्ट के अनुसार दफ़्तर शष्टम में शामिल होने वालों की संख्या 43 हज़ार 588 है।

इन्डिया के दस प्रदेश: केरला, तमिलनाडु, तेलंगाना, उडीशा, जम्मू एंड कश्मीर, कर्नाटक, पंजाब, बंगाल, महाराष्ट्र एवं देहली।

इन्डिया की जमाअतें: हैद्राबाद, कोएम्बटूर, क़ादियान, कालीकट, मेलापालियम, मंजेरी, बंगलौर, केरंग, कलकत्ता तथा करूलाई।

इसके बाद हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि यह तहरीके जदीद के दफ़्तर अव्वल का बानवेवां साल होगा, इसके पुराने खाते जारी हैं, दफ़्तर दोयम का बयासीवां साल है, दफ़्तर चहारुम का इक्तालिसवां साल है। दफ़्तर पंजुम का बाईसवां साल है और दफ़्तर शशुम का अब तीसरा साल शुरु होगा, फ़रमाया- नए आने वाले दफ़्तर शशुम में माने जाएं।

हुज़ूरे अनवर ने इसके बाद हज़रत मसीह मौऊद अलै. का माल के बलिदान से सम्बंधित एक वृत्तान्त बयान करके दुआ की- अल्लाह तआला इन कुर्बानियों के कारण हमें इसलाम का पैग़ाम पहुँचाने की तौफ़ीक़ दे रहा है। अल्लाह तआला हमारे प्रयासों में अत्यधिक बरकत डाले तथा इनके उच्चतम परिणाम पैदा फ़रमाए और हम जल्दी से जल्दी इस दुनिया में खुदाए वाहिद की हकूमत क़ायम होता हुआ देखें और आँहज़रत ﷺ के झंडे को लहराता हुआ देखें।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131–टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब